वर्ष 37 अंक : 3   17.5.2014 शनिवार (मई-जून)   शुल्क- प्रति अंक : ₹ 10.00 वार्षिक : ₹ 50.00

भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

स्वरूपलक्षी 'मैत्री' रखोगे,
तो संत की प्रसन्नता मिलेगी
और
प्रभु आपके सभी काम हल्के-आसान करके सफल कर देंगे।

ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम्। विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा॥ शिक्षापत्री,११६

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

2 मार्च 2014, फाल्गुन शुक्ल–1

चैतन्यों के राहबर
प.पू. गुरुजी के 77वें प्राकट्योत्सव की दिव्य स्मृतियाँ...

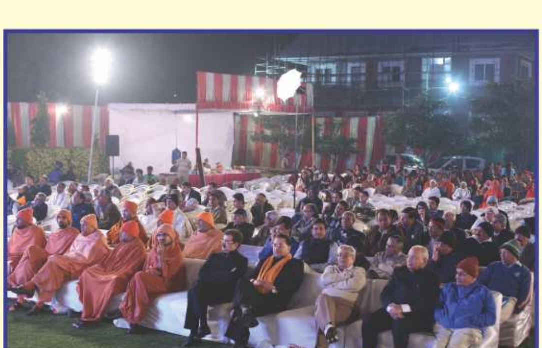

सद्‌गुरुं तं नमामि, योगीराजं नमामि!

25 मई 2014, बैसाख कृष्ण – 12 के अनुसार **ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज** का अवतरण दिन! गाँव धारी, जिल्ला अमरेली-सौराष्ट्र में पू. पूरीबा एवं पू. देवचंदभाई के घर 'झीणाभाई' के रूप में गुरुहरि योगीजी महाराज ने जन्म धरा। यह धरती का मंगल कहा जाए। हज़ारों वर्षों में ऐसे साधु धरती पर पधारते हैं...

बचपन से ही भक्ति रस में डूबे झीणाभाई ने सातवीं कक्षा तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद कार्तिक शुक्ल-7, संवत् 1965 में गृहत्याग किया और जूनागढ़ में कार्तिक शुक्ल 14 को तो पार्षदी दीक्षा ग्रहण की। संवत् 1965 के श्रावण शुक्ल-7 के शुभ दिन राजकोट में गुरु कृष्णजी अदा के घर पार्षद झीणा भक्त को गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज के प्रथम दर्शन हुए। तत्पश्चात् चैत्र शुक्ल संवत् 1967 के शुभ दिन वड़ताल में **आचार्यश्री श्रीपतिप्रसादजी महाराज** ने झीणा भक्त को भागवती दीक्षा देकर **'ज्ञानजीवनदासस्वामी'** नाम दिया। शुरुआत में उन्हें सभी ज्ञानजीस्वामी कह कर संबोधित करते। तत्पश्चात् उनके सेवकभाव और अलमस्त आध्यात्मिक स्थिति का दर्शन करते सभी उन्हें '**योगी**' कह कर संबोधित करने लगे।

त्याग-वैराग्य के मूर्तस्वरूप गुरुहरि योगीजी महाराज की दृष्टि हमेशा अपने गुरु शास्त्रीजी महाराज की ओर ही रही। आजीवन गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज की आंख के इशारे से उनकी अनुवृत्ति जान कर जीवन जीए। हर प्रकार से सामर्थ्यवान होते हुए भी उन्होंने हमेशा अपनी प्रतिभा को ढकने में ही बड़प्पन माना था। लेकिन, उन्हें एक सामान्य साधु जैसा समझने की भूल न कर जाएँ, इस हेतु **गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज** ने समय-समय पर उनके प्रति अपनी छुपी प्रीति का दर्शन कराते हुए निम्न आशीर्वाद भी बरसाए...

❋ *मैं यानि योगी और योगी यानि मैं।*

❋ *मुझ में और योगी में एक रोम मात्र भी फर्क नहीं है।*

❋ *भागवत में व्यासजी ने संत के चौसठ लक्षण-गुण जो लिखे हैं, वे और जो भी लिखने शेष रहे हों, वे सभी गुण हमारे योगीजी महाराज में मिल जाएँगे।*

❋ *योगी तो अनादि के 'योगी' ही हैं।*

❋ *योगी जैसा साधु इस ब्रह्मांड में नहीं।*

❋ *योगी तो मेरा जलते अंगारे का लड़का है।*

जलते अंगारे का लड़का अर्थात् – किसी भी प्रकार की सेवा, चाकरी या आधी रात को भी जिस पर गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज हक़ कर सकें, ऐसे थे गुरुहरि योगीबापा! परंतु, गुरुहरि योगीबापा ने तो केवल अपने गुरु को ही नहीं, बल्कि संबंध वाले मुक्तों को भी ऐसा ही अधिकार दिया।

यूँ, ऐसे 'सेवामूर्ति जोगी' ने 'सेवा' की तो अलख जगाई ही, साथ ही अपनी परावाणी से अपने आश्रितों को अपने हृदय का हार्द व्यक्त करते हुए अपनी आध्यात्मिक ऊँचाई का दर्शन भी कराया।

सन् 1952-53 से मुंबई-कपोळवाड़ी में गुरुहरि योगीजी महाराज अपने आशीर्वचनों से जब सभी को लाभांवित करते, तब **पू. कांतिकाका** ने टॅप रॅकार्डर से उन्हें 'टॅप' कर लिए थे। फिर 1968 में पहली बार गुरुहरि योगीजी महाराज के 13 आशीर्वचनों को **'प्रगट की परावाणी'** पुस्तक के दो भागों में 'अनुपम मिशन'

के भाइयों ने प्रकाशित किया था।

प.पू. गुरुजी ने तो गुरुहरि योगीजी महाराज के इन आशीर्वचनों को उनके 'स्वमुख' से स्वयं सुना है। प.पू. गुरुजी किसी भी सामान्य या आध्यात्मिक पुस्तक इत्यादि को आज भी एक लर्नर की भाँति पढ़ते हुए अकसर उपयोगी, मर्मस्पर्शी शब्दों - वाक्यों को अन्डरलाईन करते रहते हैं। **'परावाणी'** में भी उन्होंने खूब पसंद आए और साधना मार्ग में उपयोगी कई वाक्यों को अन्डरलाईन किया हुआ है। सो, अबकी बार **गुरुहरि योगीजी महाराज** की **प्राकट्य तिथि** के पावन अवसर पर इन चिंतनकणिकाओं को पढ़ें और सत्पुरुष हम से किस प्रकार की अपेक्षा रखते हैं, यह जानें...

* किसी को भगवान प्रधान होते हैं, तो किसी को व्यवहार प्रधान होता है। इन दोनों को सरीखा फल कैसे मिलेगा?
  'भगवान प्रधान' यानि – भगवान की कथा, भगवान के ही कीर्तन और भगवान की ही बातें, उसके हृदय से निकलती रहें – तो समझना कि उसके लिए 'भगवान प्रधान' हैं।
* वाणी के चार प्रकार हैं। परा, पश्यंति, मध्यमा और वैखरी। वैखरी वाणी में से वेद उत्पन्न हुए। महाराज और बड़े पुरुष की वाणी **'परावाणी'** है। गुणातीतानंदस्वामी की बातें, गोपालानंदस्वामी की बातें, मुक्तानंदस्वामी की बातें – ये सब 'परावाणी' है। इन्हें **पढ़ने और सुनने से हमारे जीव में प्रकाश होता है।**
* (भगवान की - संत की - सत्पुरुष की) अमृतवाणी हमें अमर कर देती है।
* वचनामृत के अर्थ आसानी से समझ नहीं पाएँगे। परंतु उसका खूब अभ्यास करें, तो अपने आप समझ में आ जाए। महाराज का ऐसा वरदान है।
* व्यवहार को थोड़ा गौण करके भी इसमें (सत्संग में) लग पड़ना।
* कठिन हालात में महाराज की मूर्ति याद करके धुन करने लग पड़े, तो मुसीबत टल जाती है और कैसी भी आफ़त आई हो या माहौल खराब हो, तो वह भी ठीक हो जाता है।
* खाली बैलगाड़ा 'खड़ - खड़' आवाज़ बहुत करता है और भरा हुआ गाड़ा 'कीचुड़ - कीचुड़' भारी आवाज़ से चलता है। इसी तरह प्रभु का स्मरण करते हुए भजन करें, वो बात ही अलग है।
  व्यवहार व इधर - उधर की बातें करें, उसे खाली गाड़ा जैसा कहा जाए। भगवान को याद करके भजन करें, उसे भरे हुए गाड़े जैसा कहा जाए।
* कैसा भी पापी हो, भगवान उसे अपना दर्शन करवा कर उद्धार कर देते हैं।
* भगवान और संत (जीव से) जबरन् चिपक कर उसे सत्संग करवा कर ही छोड़ते हैं।
* भगवान और संत की यदि हम आज्ञा पालें, तो दुःख जो आने वाला हो, वो टल जाए...
* जन्म - मरण का चक्कर निरंतर चलता रहता है। भगवान यदि कृपादृष्टि कर दें, तो जन्म - मरण के फेरे मिट जाते हैं।
* **अपना मान छोड़ कर** सत्पुरुष का समागम करना।

⁕ कोई यदि पूछे कि आपके घर 'साधु-बाधु' आए हैं? तो, जिसमें भगवान और संत के गुण हों वह 'साधु'! वर्ना 'बाधु' तो हैं ही।

⁕ सब कुछ मिल सकता है, लेकिन **सत्पुरुष का समागम मिलना अत्यंत दुर्लभ है।**

⁕ कोई हरिभक्त बैठे हो या न बैठे हो, लेकिन **साधु** को अपनी रोज की स्तुति, प्रार्थना, कथावार्ता तो करनी ही; उसमें कभी नागा नहीं होना चाहिए। बाहरी दिखावे की नहीं, अंतर की भक्ति होनी चाहिए... खुद के रहने के लिए अपना खास अलग कमरा न बनवाए, बल्कि सभामंडप में सभी के साथ ही अपना आसन रखे।

⁕ **बड़े पुरुष के वचन सिद्ध होते हैं, वे निष्फल नहीं जाते।**

⁕ हमने महाराज का आशरा लिया है, तो सिद्ध गति पा लेनी है। **गुरु जो मिले हैं, इनके क़ैफ में रहना।**

⁕ संकल्प मात्र बंद हो जाएँ, उसे 'समाधि' कहा जाए। विचार, संकल्प, जगत के मनसूबे जब बंद हो जाएँ और भीतर में ठंडक हो जाए, तब समझना कि वह समाधि है... वृत्तियाँ भीतर मुड़ जाएँ, तब भीतर में ठंडक होती है। **जब तक जगत के मनसूबे उठने कम नहीं होते, तब तक सत्संग ही कहाँ किया है?** जगत के मनसूबे बंद होने चाहिए, शांति होनी चाहिए।

⁕ सत्पुरुष का विश्वास हो, तो वे (यानि – इनकी इच्छा) हमारा प्रारब्ध बन जाते हैं और पूर्व के प्रारब्ध के ढेर जल जाते हैं। **सत्पुरुष के वचन से प्रवृत्ति और निवृत्ति करनी। सत्पुरुष का वचन मानने से ही जीव में शांति होती है।**

⁕ भले कहीं भी हों, लेकिन सत्पुरुष की दृष्टि पड़ी हो तो भीतर में शांति हुई ही समझना... नदी शोर मचाती हुई चलती है, लेकिन समुद्र से मिलने पर उसका शोरगुल बंद हो जाता है। इसी प्रकार **व्यवहार के मनसूबे बंद हो जाएँ, तो समझना कि समागम किया है।** परंतु, **जब तक हमें सत्संग में दिलचस्पी नहीं हुई है, तब तक समागम नहीं किया कहा जाए।**

⁕ राजा या सेठ का नौकर उसके साथ ही साथ खूब रहता हो, लेकिन मालिक के दोष देखता रहता हो – इन्हें ऐसा करना चाहिए था, इनमें तो बुद्धि नहीं है, ऐसा है-वैसा है; सिर्फ, पेट भरने के लिए साथ में रहता हो, उसमें मालिक के गुण कैसे आएँगे? इसी प्रकार **सत्पुरुष के साथ रहते हुए भी निर्दोषबुद्धियुक्त नहीं रहें, तो उनके गुण नहीं आएँगे।**

(सत्पुरुष के) साथ में रहना, लेकिन **निर्दोषबुद्धि से** रहना। फिर, **यदि लाख कोस दूर रहेंगे, तो भी उनके गुण हम में आएँगे। निर्दोषबुद्धि जैसी एक भी सेवा नहीं...**

⁕ फल की इच्छा से सेवा नहीं करनी; जैसे कि – इतनी सेवा करूँ तो इतना मुझे मिले – ऐसे भाव से नहीं, ऐसी इच्छा से नहीं, सकामभाव से नहीं। निष्कामभाव से यानि – अक्षरधाम की प्राप्ति करनी है यह भाव। वो हमें रखना।

⁕ यदि श्रद्धा न हो और (सत्पुरुष के) चरण स्पर्श करें, तो उसका क्या फायदा?

- **संत के प्रति तनिक भी सद्भाव आ जाए, तो उसे संस्कार लग जाते हैं और संत उसे छोड़ते नहीं।**
- बड़े पुरुष का संबंध हो जाना चाहिए। संबंध हो जाए, फिर तो वे उससे जबरन् चिपक जाते हैं। लेकिन 'बड़े पुरुष का संबंध हो तो'!!
- बड़े पुरुष का संबंध हुआ है, वह बढ़िया से बढ़िया बात है और उनके प्रति मनुष्यभाव आए वो घटिया से घटिया बात है।
- सत्पुरुष को हमसे कुछ ले लेना नहीं है। वे तो हमारा 'अज्ञान' लेकर 'ज्ञान' देते हैं, 'अधर्म' लेकर 'धर्म' देते हैं। **सत्पुरुष हमारा अज्ञानरूपी अंधकार टाल कर, हमें ज्ञानरूपी गंगा दे देते हैं।** उन्हें कोई स्वार्थ नहीं है। यह बात यदि हमें समझ में नहीं आई, तो हम संत का अवगुण ले बैठेंगे।
- जहाँ देह और दोष स्वभाव का खंडन होता है, तो समझना कि यह एकांतिक की सभा है; परंतु जहाँ बखान होया करे, वो एकांतिक की सभा नहीं है।

  जहाँ ब्रह्म निरूपण होता हो, दोष का खंडन होता हो, स्वभाव का खंडन होता हो तो समझना कि वहाँ भगवान साक्षात् विराजमान हैं।
- भगवान और साधु का जो संबंध हुआ है, वह हमें खोना नहीं चाहिए। **आपस में सुहृद्भाव रखें, एक-दूजे के प्रति मित्रभाव रखें और एक-दूजे की महिमा की बातें करें, तो यह संबंध क़ायम बना रहेगा।** इसमें तनिक भी खंडन हो, तो बड़े पुरुष के साथ का संबंध टूट जाता है।
- **हमें जो संबंध मिला है, वह पूर्व के पुण्य के बिना संभव नहीं है।**
- जाने-अनजाने में जिसे भी महाराज का संबंध हुआ होगा, उसे महाराज कभी छोड़ते नहीं।
- ब्रह्मरूप होकर भगवान की भक्ति क़ायम करें, वह सोलह आना सत्संग। अभी हम तो फिलहाल चार आना सत्संग करते हैं और उसे बारह-सोलह आना जितना मान लेते हैं। कैसे मेल बैठेगा?
- 'जीव के सत्संग' के लिए हम इस साधु की सेवा करते हैं, धर्मादा देते हैं, जरूरत की चीजें लाकर देते हैं; परंतु, इससे 'जीव का सत्संग' नहीं हुआ, बारह आना-चार आना हुआ। सो, जीव में बल नहीं आएगा। जीव में (तत्काल) बल प्राप्त करने के लिए श्रीजी महाराज ने वचनामृत मध्य 63 में तीन उपाय बताए हैं–

  भगवान और संत में अतिशय प्रीति,

  सेवा में अतिशय श्रद्धा

  और

  नवधा (यानि – नौ प्रकार से) भगवान की भक्ति।
- सत्पुरुष को प्रसन्न कर लेना–वो (हमारा) आख़िरी जन्म है।
- सत्पुरुष की कृपा दृष्टि से तो इंद्रियों, अंतःकरण और जीव में अज्ञान रहेगा नहीं। **इस साधु के बिना अज्ञान जाएगा नहीं।** मुझे तो खूब (लगाव) है कि ज्ञान देकर सभी को ब्रह्मरूप करना है। पर क्या करें? मंदिर के व्यवहार ने ऐसा जकड़ा हुआ है, सो ज्ञान देने के लिए फ़ारिग़ नहीं होते। अब तो साधु-सत्संगी

को मेरे पास रख कर (ज्ञान की) बातें ही करनी हैं।

* देह में रोग आए, तो वैद्य या डॉक्टर के पास जाना पड़ता है। अंतर का रोग कौन मिटाए? भगवान व संत!
* जिसे भगवान का साक्षात्कार हुआ हो और सत्पुरुष का आशीर्वाद मिला हो, वह फिर मन के शिकंजे में नहीं आता।
* गुरुमुखी होना अर्थात्– गुरु को मन सौंप कर उनसे पूछ कर ही प्रवृत्ति करे, वह सुख भोगता है। मनमुखी दुःखी रहता है।
* मनमानी करता हो, त्याग रखता हो, मंदिर का सारा काम अकेले करता हो, कितनों को सत्संग कराता हो, वह न्यून है। उसे किसी न किसी दिन विघ्न आएगा ही। दिन में भले ही तीन बारी खाता हो, आलसी हो और सोया रहता हो–ऐसा दोषयुक्त हो, लेकिन वह यदि अपनी मनमानी छोड़ कर संत के कहे में रहता हो, वह श्रेष्ठ है। संत कहें वह 'निर्गुण' है और मनमानी करना 'सगुण' है।
* भगवान का साक्षात्कार-अनुभव हो जाने के बाद भी इस दुनिया की कौन-सी चीज हमें प्यारी रहती है? दादाखाचर, पर्वतभाई जैसे बड़े भक्तों को महाराज के सिवा कोई चीज प्यारी नहीं रही थी।
* **कोई सिद्धपुरुष आएँ, श्रीमंत आएँ, सिद्धि दिखाएँ, चमत्कार दिखा दे तो भी प्रभावित न हों और सहजानंदस्वामी के सिवा हमारा मस्तक कहीं और न झुके तब सच्ची निष्ठा हुई जानना...** हमारी दृष्टि में भगवान बस जाएँ, फिर कुछ दिखाई नहीं देगा।
* भगवान सहाय रूप होते हैं, लेकिन हमें प्रयत्न करना पड़ता है।
* काया यानि–हमारी देह और माया यानि–यह व्यवहारमात्र धुएँ की छाया के समान है।
* शिष्य गुरु को मन सौंप दे; तो अंतःकरण का अज्ञान (गुरु) टाल देते हैं, अन्यथा नहीं टलता।
* हम अपना मन जब तक रखेंगे, तब तक मन सौंपा न कहा जाए। जब तक मन हमारा है, अंतःकरण में बसा हुआ है, तब तक वह सौंपा हुआ न कहा जाए। सब कुछ सौंप सकते हैं, लेकिन मन नहीं सौंपा जाता।
* जनक राजा ने अपने गुरु अष्टावक्र से कहा– *गुरु महाराज! मेरा सब कुछ ही आपका है।*

  गुरु उसे ज्ञान दे रहे थे कि सहज ही जनक राजा उठे।

  गुरु ने पूछा– *जनक, क्यों उठे? तूने तेरा मन तो मुझे सौंपा था। मुझे पूछे बिना मन में उठे विचार को क्यों बनाया? मनसूबे भले उठे, पर देह से उसे क्यों क्रियान्वित करें?*

  राजा जनक ने कहा– *भूल हो गई; लो, बैठ जाता हूँ।*

  तब गुरु ने पीठ थपथपाई और... जनक को 'विदेही' बना दिया! यूँ गुरु को मन सौंप दें, तो अतःकरण का अज्ञान भी वे टाल देते हैं।
* **भगवान तो भाव के भूखे हैं।** ऐसा भाव जब हमारे हृदय में अखंड रहा करे और मन सौंपा हो, तो अंतःकरण का अज्ञान (गुरु) टाल देते हैं। लेकिन, उसके बिना टलता ही नहीं। **मन सौंपना यानि–अपना निजी कुछ भी नहीं रखना।**

⁕ **बाहर से आए हुए में हमें 'सद्‌गुण' दिखते हैं, परंतु साथ के साथियों में कम दिखते हैं; असद्‌भाव रहता है।**

⁕ संत और हरिभक्त के माहात्म्यसहित महाराज का सर्वोपरि निश्चय अर्थात् – **भक्त सहित भगवान का 'निश्चय' हो, वो 'निश्चय' माहात्म्यवाला है।** कैसा 'निश्चय' बताया? रूखा निश्चय काम नहीं करता।

⁕ जीव सौंप कर अनुवृत्ति (मरजी) में रहना कठिन है। दो आना भी किसी का पक्ष रह ही जाता है। **सत्संग करो और जीव में भगवान को पधराओ।**

⁕ स्वामी (मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी) को महाराज की मूर्ति अखंड दिखती थी, फिर भी प्रत्यक्ष मूर्ति की उन्हें कितनी तान थी? **हमें तो मूर्ति दिखाई भी नहीं देती हो, कोई आत्मदर्शन भी न हुआ हो, फिर भी फट् से आराम कर लेते हैं।** वे तो अनादि ब्रह्म थे, तब भी महाराज के दर्शन और समागम की इतनी झंखना रखी थी। उनका कुछ बाकी नहीं था। मूर्ति अखंड साथ थी, लेकिन यह तो गरज की बात है।

⁕ जिसे गरज हो उसे संभालना नहीं पड़ता, लेकिन जिसे नहीं उसे संभालना पड़ता है। गरज से जब सत्संग करेंगे, तब जीव में शांति होगी।

⁕ सभी 'भक्त' कहलाते हैं, लेकिन 'प्रगट स्वरूप' की पहचान हो जाए, तो अंतर में प्रकाश - विस्फोट हो जाए।

⁕ भगवान और संत की दया हो, तो 'भक्त' बनना कठिन न होगा।

⁕ भगवान के भक्त को **तीन प्रकार से ध्यान रहता है** :

1. दृढ़ निश्चय रहे कि – 'मैं भगवान का भक्त हूँ' – यह है 'निश्चयरूपी ध्यान'।

2. भगवान साकार हैं, सर्वोपरि हैं, पृथ्वी के ऊपर प्रगट हैं, अनंत कोटि ब्रह्मांड के मालिक हैं और उनका किया ही सब कुछ होता है।

'साकार, सर्वोपरि, कर्ता - हर्ता और प्रगट' – महिमा का ऐसा विचार जब हमारे हृदय में रहे, उसे 'महिमारूपी ध्यान' कहा जाए।

3. मुझे साधु के पास जाना है – ऐसी वृत्ति रहे, वो भी 'ध्यान' है।

⁕ फिलहाल कई भक्त माला फेरते हैं, तीर्थ करने के लिए जाते हैं, यज्ञयोग करते हैं। वे सभी 'भक्त' तो कहे जाते हैं, परंतु उन्हें प्राप्ति भी वैसी मिलेगी। लेकिन, **प्रगट विचर रहे इस स्वरूप की यदि पहचान हो जाए, तो भीतर का अंधकार मिट जाए। (जीवन में चमत्कार हो जाए)**

⁕ एकांतिक संत या भक्त या जिसमें धर्म, ज्ञान, वैराग्य एवं भक्ति हो उसकी यदि पहचान हो जाए, तो हम 'भक्त' कहे जाएँ।

⁕ सत्पुरुष की कृपा हो, तो जीव 'शिव' बन जाता है।

(शेष अगले अंक में)

✡✡✡

'नारायणी सेना' के 'सेनापति'
हर प्रसंग पे सबकी ढाल बने... हे काकाजी!

12 जून – गुरुहरि योगीजी महाराज की कल्याण योजना की प्रथम पंक्ति के 'सैनिक' और फिर उनकी नारायणी सेना के 'सेनापति' बने – ऐसे **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज का प्राकट्य दिन!**

प्रखर विद्वता, अप्रतिम बुद्धिमत्ता, मोहक और प्रतिभाशाली व्यक्तित्व, गुजराती और अंग्रेजी दोनों भाषाओं पर जिनका अद्‌भुत प्रभुत्व एवं जिनकी वाक्‌छटा से संपर्क में आने वाला व्यक्ति चकाचौंध हो जाए, फिर भी अत्यंत नम्र, ममताभरा, सरल, मिलनसार स्वभाव एवं किसी भी प्रकार का क्षोभ या बिना हिचक एक सामान्य व्यक्ति की भाँति, जिसे खुले दिल से मिल सकें ऐसी सहज और सामान्य जीवनशैली...

जीवनभर गुरुहरि योगीजी महाराज के संबंध वाले को 'भगवान' दिया करने के सिवा उन्होंने अन्य कोई उद्यम नहीं किया। ऐसे ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के जीवन प्रसंग दोहराते हुए यही एहसास होता है कि स्वयं प्रतिष्ठाहीन होकर भी आश्रितों की जिम्मेदारी संभाली, बेवज़ह के आक्षेपों से झूझे, अकारण अवहेलना सही और प्रतिकूल परिस्थितियों में रहने के बावजूद जीवन की अंतिम सांस तक प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष वेदनाओं को अपने स्मित से छुपाते हुए 'मस्त गुलाबी मिज़ाज़' की अनुभूति कराते रहे। हर एक को हर प्रकार से सुख देने में उन्होंने कोई कसर नहीं छोड़ी। किसी की आर्थिक समस्या हो, कोई मन से दुःखी हो या किसी के परिवार में क्लेश, हाय-तौबा का माहौल हो, ऐसों का हृदय परिवर्तन करके संप से रहना सिखाया। किसी को मान की अपेक्षा हो, तो उसे मान देकर भी सत्संग में टिका कर सुखी किया। किसी को व्यवहार का दुःख हो, तो उसकी पूर्ति करके भी उसे अपने साथ अध्यात्म के मार्ग पर अग्रसर किया।

सच कहें तो आध्यात्मिकता के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचे ब्रह्मस्वरूप काकाजी में ऐसा अद्‌भुत कौशल था कि जैसे नवजात शिशु शुरुआत में लड़खड़ाते हुए चलता है, ऐसे कमज़ोर मुमुक्षु के अंतर की अभीप्सा को पहचान कर, उसकी कक्षा के मुताबिक उसी की रीति से वे समाधान देते। उनके हृदय में हर एक भक्त के लिए – चाहे वह कोई नया मुमुक्षु हो, गुणातीत समाज का कोई बड़ा एकांतिक हो या तीव्र अभीप्सा वाला साधक वर्ग का मुक्त हो, सभी पर वात्सयभरी – करुणामयी अनुकंपा थी। किसी भी तरह संबंध वाले देह से स्वस्थ रहें, मन से प्रफुल्लित और आत्मा से निर्बंध व स्वाधीन रहें, ऐसी उनकी सतत झंखना थी।

उनके संपर्क में आने वाले किसी भी व्यक्ति को कम से कम समय और श्रम में ज़्यादा से ज़्यादा लाभ हो, ऐसी अद्‌भुत सूझ-करामत एवं नई-नई तरकीबें – जिसे वे **'मास्टर की'** कहते – सहज ही उपलब्ध थी और इस संदर्भ में वे कई बार कहते भी – *'कराँती पूरे दिन लकड़ी चीरता है और सूरत की तेलिन सारा दिन मज़दूरी करती है, तब जैसे-तैसे पेट भरे इतनी मज़दूरी मिलती है; जबकि पालखीवाला (सुप्रसिद्ध वकील श्री नानी पालखीवाला) जैसे से थोड़ी*

सलाह लेने के लिए जाएँ, तो उसकी फीस हज़ारों रुपए होती है। यूँ आध्यात्मिकता में भी करामत सीख जाओ, हजामत नहीं करते रहना।'

साथ ही वे कहते–

'मेरी हर एक बात वचनामृत या स्वामी की बात के आधार पर ही होगी। मैं अपने घर की कोई बात नहीं करता।'

गुणातीत पुरुषों के ऐश्वर्य, प्रभुता, अद्वितीय शक्तियों, चमत्कारों इत्यादि को दोहराना - स्मृति करना एक प्रकार का भजन तो है, लेकिन साथ ही साथ उन्होंने अपने जीवन द्वारा जो सिद्धांत, जीवन संदेश-आध्यात्मिक रहस्य और गूढार्थ प्रवर्ताए हैं, उसका यत्किंचित् मनन - चिंतन करते हुए हमारे जीवन में अपनाने के लिए हम प्रार्थना करें, वही उनके प्रति और इससे अधिक हमारी आत्मा की परम पवित्र सेवा कही जाए।

ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज ने तो प्रगट प्रभु की निश्रा में सत्संग, भक्ति एवं सत्कर्म करते हुए यथार्थ फल प्राप्त करने के लिए समय-समय पर हमें कई करामात बताई हैं। जिसमें **'फोर पॉईन्ट प्रोग्राम'** अर्थात् – चार सूत्रीय कार्यक्रम, एक अद्भुत करामत उन्होंने बताई। चूँकि ब्रह्मस्वरूप काकाजी तो आज भी हाज़राहज़ूर ही हैं, इस करामात के अनुसार यदि आज भी चलना शुरू कर देंगे, तो नित्य नवीन अनुभव कर पाएँगे। काकाजी स्वरूप **प.पू. दिनकरभाई** ने अत्यंत सरल भाषा में इस विषय को खूब अच्छी तरह समझाया है। **12 जून – ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के 96वें प्राकट्योत्सव एवं 12 जुलाई – गुरुपूर्णिमा** के मंगल अवसर पर उनके द्वारा दी सूझ - समझ यहाँ प्रस्तुत करते हैं –

श्रीजी महाराज ने करुणा करके अपने संबंध में आते सभी जीवों के लिए सुदर्शन चक्र समान **'शिक्षापत्री'** दी। जो भी इसका रहस्य समझ कर यथार्थ पालन करेगा, उसके जीवन में कभी भी व्यावहारिक या आध्यात्मिक समस्याएँ उत्पन्न नहीं होंगी।

प्रगट की निष्ठा वाले सभी भक्त अध्यात्म मार्ग पर सहजता एवं सुख से प्रगति कर सकें, इस हेतु गुरुहरि प.पू. काकाजी महाराज ने भगवान स्वामिनारायण के 'वचनामृत' और 'मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी की बातों' के आधार पर यह 'फोर पॉईन्ट प्रोग्राम' द्वारा मानो शास्त्रों का सार - निचोड़ दे दिया।

प.पू. काकाजी तो कहते थे –

'नियमित रूप से 'फोर पॉईन्ट प्रोग्राम' करोगे, धेन यु विल कमीट नो मीस्टेक। 'हर प्रकार से तुम्हारी रक्षा होती रहेगी' – यह मैं गॅरन्टी देता हूँ। परंतु, इसकी प्रॅक्टीस (अभ्यास) करनी पड़ेगी। अंतर से जाग्रत होकर (स्वीच ऑन करके) दिल की सच्चाई से मेरे इस फॉर्म्युला को अपनाना पड़ेगा।'

आज भी यदि आपको करना ही है, तो प.पू. काकाजी आपके लिए प्रगट हो जाएँगे। वे गए ही नहीं हैं। जो आध्यात्मिक अनुभूति आप करना चाहते हैं, वह जरूर होगी ही। वे तो दयालु पुरुष हैं, आपको आध्यात्मिक अनुभव करवा ही देंगे।

आप जिस गुणातीत संत के जोग में आए हैं, उनके द्वारा आपको कुछ न कुछ चमत्कार - सा हुआ दिखाई दिया

ही होगा। पर, याद रखना कि वे कोई जादूगर नहीं हैं। दरअसल, वे आपकी चेतना को अनुभूति करवाते हैं, जो आपके ढाँचे में फिट हो जाए ऐसी होती है। अन्यथा आप विश्वास नहीं कर पाओगे। जरूरी नहीं कि जो अनुभूति आपको हो; ऐसी ही अन्य को भी हो।

एक बार भगवान ईशु (जीसस) से उनके भक्तों ने कहा– *आप हमें चमत्कार दिखाईए।*

ईशु बोले– *घास ज़मीन से उगती है, क्या वही चमत्कार नहीं है? सूर्य प्रकाश दे रहा है और फूल सुंगध से महक रहे हैं, क्या यह चमत्कार नहीं? लेकिन, आप यह नहीं मानेंगे। क्योंकि – यह तो सामान्यतः सभी के लिए है।*

इससे भी गहरा ऐसा एक चमत्कार है। कई सालों पहले की बात है : 1963-64 में विक्टोरिया मिल्स के मालिक श्री जालंध किसी भक्त के साथ प.पू. योगीबापा का दर्शन करने के लिए मुंबई-अक्षरभुवन में आकर बैठे थे। थोड़ी देर के बाद उन्होंने प.पू. बापा से कहा– *महाराज, कोई चमत्कार दिखाइए!* प.पू. बापा कुछ बोले नहीं। सो, दोबारा उन्होंने यही कहा, पर प.पू. बापा तब भी कुछ बोल नहीं रहे थे। उन्होंने फिर जब यही बात दोहराई, तो **प.पू. बापा एकदम बोले– *आप मेरे सामने बैठे हैं, यही 'चमत्कार' है।*** मतलब, भगवान को अखंड रखी विभूति का हमें योग होना– अपने आप में एक चमत्कार है! पर, इतना सर्वसुलभ हुआ होने के कारण हम यह मान नहीं सकते।

दरअसल, हर एक की मंशा होती है कि मुझे ऐसा अनुभव (चमत्कार) हो, जो अन्य किसी को न हुआ हो और... यह संभव भी है, परंतु उसे पाने के लिए अविरत प्रयास करना पड़े।

ऐसी अनुभूति हो इसलिए नियमित रूप से निम्न '**फोर पॉईन्ट प्रोग्राम**' से चलना अनिवार्य है...

प.पू. काकाजी तो कहते थे –***एन्ड यू वील हॅव सिरीज़ ऑफ स्पिरीच्युअल एक्स्पीरियन्सीस!***

1. स्वरूपयोग

प्रतिदिन दो समय भजन– आवाह्न, धुन, ध्यान व प्रार्थना समेत सुबह एवं सायं 25 से 30 मिनिट एकाग्र चित्त से **प्रत्यक्ष स्वरूप की स्मृति सहित** भजन करें!

प.पू. काकाजी कहते – *सभी योगों का राजा 'स्वरूपयोग' है!*

कहा जाता है कि *'जहाँ हमारा मन, वहीं हम'*। सो, स्थिर मन से प्रगट स्वरूप के संबंध की महिमा के विचार में रहते हुए हम अखंड 'अक्षरधाम' में रहेंगे। फलस्वरूप, एक परम दिव्य चेतना या स्वरूप की अनुभूति होगी।

प.पू. काकाजी कहते– *'सभी क्रियाएँ निर्गुणभाव से करने के लिए सुबह उठते ही 5 मिनिट भगवान और गुणातीत स्वरूपों के चरणों में निम्न प्रार्थना करनी चाहिए।'* वे अंग्रेजी में कहते–

'इर्रिस्पॅक्टीव ऑफ माई ओन थींकींग, लाईकींग, बीलीफ ऑर कन्वीक्शन, ओ लॉर्ड! लॅट धाई वील बी डन.'

अर्थात्– मेरी सोच-समझ, मान्यता, पसंद या ज़िद्द होने के बावजूद, हे प्रभु! आपकी जो इच्छा हो, वैसा ही करना।

प्रभु की बंसरी बनने के लिए उनसे अरज करनी होगी कि मेरा 'रीमोट कन्ट्रोल' आप अपने हाथ में ले लिजिए। टी.वी. के रीमोट कन्ट्रोल से हम अपनी इच्छानुसार चैनल बदल देते हैं। एक चैनल अच्छा न लगे, तो दूसरे के लिए बटन दबाते हैं, वह अच्छा न लगे तो तीसरा। इसी प्रकार प्रार्थना करें –

प्रभु ! मेरा रीमोट कन्ट्रोल आप अपने हाथ में ले लिजिए... मैं जिस रास्ते पर जा रहा हूँ, यदि वह अच्छा न हो या मेरे हित में न हो, तो मुझे सही राह पर जाने के लिए मार्गदर्शन देना; ताकि मुझसे कहीं भी गल्ती न हो। प्रभु, दिनभर मेरे साथ रहकर रक्षा करना।' यह है पहला पोईन्ट।

2. कथावार्ता

एक रुचि वालों को नित्य आपस में प्रगट स्वरुप के प्रसंगों की चर्चा, उनकी कथावार्ता एवं गुण ही गाने व सुनने का अभ्यास रखना चाहिए।

वचनामृत, स्वामी की बातें, भगवान स्वामिनारायण का जीवन चरित्र, गुणातीतानंदस्वामी, भगतजी महाराज, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी, साहेब जैसे गुणातीत संतों के जीवन चरित्रों को पढ़ना चाहिए। उनके आशीर्वचन सुनने चाहिएँ। धार्मिक (आध्यात्मिक) पुस्तकों में ऐसी शक्ति होती है जिससे आपको प्रेरणा (इन्सपीरेशन) मिलती है और पुस्तक तो हम सफ़र दौरान कहीं भी साथ में ले जा सकते हैं।

3. सत्कर्म

जैसे कि श्रीमद् भगवद्गीता में बताया है कि *'जन्म होते ही कर्म की व्याख्या हम पर लागू हो जाती है। अर्थात्– उसी क्षण से हम कर्म करने लगते हैं। कर्म करे बिना तो हम रह ही नहीं पाते। फिर वह प्रारब्ध, संचित हो या क्रियमाण हो।'* अतः प्रतिदिन हमें एक 'सत्कर्म' कर लेना चाहिए।

सत्कर्म किसे कहा जाए? **प.पू. काकाजी** बताते थे –

* जिस कार्यक्षेत्र में हम निपुण हों, जिसमें हमारी स्पेशियालीटी-एक्सपर्टनेस-स्कील हो, और
* प्रगट प्रभु के संबंध वाले मुक्त को उसकी जरूरत हो,
* तो, **भगवत्स्वरुप संत के वचन से** व निरपेक्षभाव से – फल की तनिक भी अपेक्षा रखे बिना कि– *'मैं यह करुँगा, तो मुझे ऐसा लाभ होगा...'* ऐसी भावना न रखते हुए,
* केवल हमारे 'प्रगट प्रभु' को प्रसन्न करने के लिए अहोभाव से करें।

प्रभु की प्रसन्नता प्राप्त कर लेने की बात पर प.पू. काकाजी खूब ज़ोर देते थे; क्योंकि प्रभु की प्रसन्नता हेतु यदि न हो, तो हमें अहंकार आ जाता है कि– *यह तो मैंने किया है, यह तो मैं ही कर सकता हूँ।* ऐसी भावना से करेंगे, तो वह कर्म 'तमोगुणी' बन जाता है।

उपरोक्त चार सूत्रों को ख्याल में रखते हुए आप जो भी भक्तिरूप क्रिया करेंगे, वह 'सत्कर्म'

बनता है। प.पू. काकाजी यह भी कहते कि *यह तो 'पावर पील' है।* जैसे किसी दवाई के खाने से आप ताक़त महसूस करते हैं या गाड़ी में लगाए डाइनेमो से बैटरी चार्ज हो जाती है, इसी प्रकार सत्कर्म में बहुत ताक़त है, जिससे ऊर्जा मिलती है। वे यह भी कहते– *'जब कोई इम्पॉसीबल (असंभव) कार्य करना हो, तब योगीजी महाराज को याद करके दो-तीन 'सत्कर्म' करने के बाद मैं जब वह करता हूँ, तो वह अवश्य हो जाता है।'* सो, हमें भी ऐसे सत्कर्म जरूर करने चाहिएँ।

4. रात्रि की प्रायश्चित् रूप प्रार्थना

रात को सोने से पहले बिस्तर पर बैठ कर प्रायश्चित् रूप प्रार्थना करें– *'गॉड, व्हॉटेवर आई हॅव डन इन माई होल डॅ, डन नोईंग्ली और अननोईंग्ली, वीच यु मे नॉट हॅव लाईक्ड, प्लीज़ फर्गीव मी फॉर इट।'* अर्थात्– हे प्रभु! पूरे दिन में जाने-अनजाने में मुझसे कुछ भी गलत या आपकी मरजी के विरुद्ध कर्म हुआ हो, उसके लिए आप मुझे माफ़ कीजिएगा। अंतर से की गई हमारी प्रार्थना प्रभु अवश्य सुनेंगे और उस दिन हमसे जो कुछ भी गलती हुई होगी, उसे वे तनिक भी गिनेंगे नहीं।

इसी बात को प.पू. काकाजी यूँ बताते कि– *'रात को सोते समय आप जब प्रार्थना करते हुए सो जाते हैं और सुबह उठ कर प्रार्थना करते हैं, तो चार-घंटे आप जो सोए उस दौरान आप समाधि में ही रहते हो।'* समाधि लगाकर तो हम बैठ नहीं पाते। पर, रात को सोते समय और सुबह उठते ही पाँच मिनिट भगवान और गुरुदेव को याद करने से हमारी नींद 'समाधि' में परिवर्तित हो जाती है और फल भी समाधि का ही मिलता है। **अष्टांगयोगिओं को ख्याल पड़ता होगा कि समाधिस्थ होना कितना कठिन है। आठ योगों का अंतिम चरण समाधि है!** प.पू. काकाजी ने आशीर्वाद दिए हैं, तो हमें समाधि का फल तो जरूर मिलेगा।

रात्रि को सोने से ठीक पहले बिस्तर पर बैठ कर करी प्रार्थना का वर्किंग ऐसा है–जैसे रुई की गांठ में एक सुलगती तीली डाल दी हो, तो किसी को ख्याल भी न पड़े, पर वह चिनगारी सारी गांठ को खाक कर देगी। ठीक वैसे ही भले ऐसी प्रार्थना करके सो जाने से हमें पता भी न चलता हो, पर सुषुप्ति में वह भजन जारी रहता है, जो हमारी वृत्तियों का शुद्धिकरण कर देता है।

हम ऐसा मानते हैं कि हम जो भी करते हैं, वह सही ही है, लेकिन जरूरी नहीं कि वह सही ही हो। जैसे कोई भूखा व्यक्ति आपके पास आकर कहे कि *मैं तीन दिन से भूखा हूँ, कृपया मुझे कुछ पैसे दे दीजिए।* यह सुनने पर भरतजी की भाँति आपने **दया की वृत्ति के कारण भगवान को भूल कर** यदि उसे पैसे दे दिए और उन पैसों से उसने मांस खाया, शराब पी या कुछ गलत कार्य किया, तो आप उसके पाप में भागीदार बन जाएँगे। आप कहेंगे कि *मैंने तो इस हेतु उसे पैसे दिए नहीं थे। तो, फिर भागीदार कैसे बना?* लेकिन, जैसे अनजाने में हमारा हाथ अग्नि में आ जाए, तो वह जल ही जाता है, ठीक उसी प्रकार उस व्यक्ति द्वारा किए पाप के भागीदार हम बन ही जाते हैं। जबकि हम सोचते हैं कि *मैं तो दानवीर हूँ, किसी का बुरा नहीं करता। फिर भी भगवान मुझे ही क्यों इतनी तकलीफ देते हैं?* पर, उसके लिए हम ही जिम्मेदार हैं; क्योंकि हम

हमारी प्रकृति के अधीन होकर स्व-भाव प्रेरित क्रिया करते हैं। अतः प.पू. काकाजी ने यह जो टॅक्नीक (करामत) बताई है, उसी प्रकार चलना चाहिए।

आप कुछ भी करना चाहते हैं, तो सबसे पहले अपने इष्टदेव, अपने स्वरूप को एक मिनिट याद करके करो। यदि आपको किसी को पचास रुपये देने हों, तो पहले भगवान को याद करके प्रार्थो–

‘हे महाराज, हे गुरुदेव, मैं यह कर रहा हूँ, वह करूँ या नहीं? आप मुझे प्रेरणा दें।’

सच, फिर पारमेश्वरी शक्ति अवश्य आपको तुरंत प्रेरणा देगी, क्योंकि हमारे प्रभु तो ‘प्रगट’ हैं। आप जिसे पैसे देंगे, उसमें भी परिवर्तन आ जाएगा। वह आपके पैसे का दुरुपयोग नहीं करेगा।

प.पू. काकाजी अपने लाक्षणिक ढंग से कहते– *‘नौकारमंत्र याद करके करो। पाँच बंबावाले (अग्निशमन करने वाले) को बुलाओ।’*

हर क्षण भगवान को याद करके काम करने में हमारा क्या नुकसान है? हालाँकि इतनी प्रार्थना करने के बावजूद हम हमारी प्रकृति, स्वभाव या हमारी हॅरीडिटी (आनुवांशिकता) के अधीन कार्य करेंगे। पर, यह बात कैसी है कि– कपड़े सुखाने के लिए हम जो वायर लगाते हैं, वह दिखने में बिजली के वायर जैसा लगता है; पर बिजली का वायर इलॅक्ट्रीक करंट से चार्ज्ड होने के कारण उसे छूने से हमें करंट लगता है। ठीक उसी प्रकार प्रगट प्रभु को याद करके क्रियान्वित संकल्प ब्राह्मीशक्ति से चार्ज्ड हुआ है। फलस्वरूप वो क्रिया **‘स्वभावप्रेरित’** न रह कर **‘प्रभुप्रेरित’** बनती है।

यह ‘फोर पॉईन्ट प्रोग्राम’ करने से हमें ही लाभ है। प.पू. काकाजी ने तो हमें वचन दिया है कि *‘यदि कुछ नुकसान हुआ, तो वह मैं मेरे सिर पर ले लूँगा।’* उनके वचन तो शाश्वत् हैं; आज भी हैं, डेड नहीं हो गए।’ हे काकाजी महाराज! हमें आप ऐसी सूझ व बल देना कि आपके द्वारा बताए रास्ते पर हम अग्रसर हों...

✡✡✡

भक्तों के सुखनंदन प.पू. गुरुजी के 77वें प्राकट्योत्सव को लेखनी से निहारें...

अबकी बार हिंदू कॅलेन्डर के अनुसार प.पू. गुरुजी की प्राकट्य तिथि 2 मार्च 2014, रविवार को होने के कारण **‘योगी परिवार आनंदोत्सव’** उसी दिन गुणातीत समाज के सभी मुक्तों ने एकत्रित होकर मनाया। वैसे शुरुआत तो **26 फरवरी** से ही हो गई थी, जब इस उत्सव में अपने दर्शन, सेवा, समागम का लाभ देने के लिए पू. किशोरभाई मास्टर्स के साथ **प.पू. दिनकरभाई** का आगमन हुआ। **27 फरवरी 2014–महाशिवरात्रि** के शुभ दिन **पू. अभिषेक** ने प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दिनकरभाई की निश्रा में **‘अपना घर’** में लघुरुद्र किया।

और... **28 फरवरी** और **1 मार्च** की दोपहर तक ताड़देव मंदिर में प.पू. गुरुजी से जुड़े गुजरात, मुंबई, पंजाब, हरियाणा, यू.पी. के तकरीबन सभी मुक्त आ गए थे। पवई से **प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई** करीब तीस मुक्तों के साथ आए। गुणातीत ज्योत से

प.पू. हंसाबहन गुणातीत, पू. डॉ. नीलम बहन, गुणातीत प्रकाश के **पू. इलेशभाई, पू. नंदुभाई** इत्यादि आए। **पू. धरमस्वामी, पू. अक्षरस्वामी** इत्यादि भी 'गुणातीत कुनबे' के मानो स्नेहमिलन में शामिल होने के लिए आ गए।

1 मार्च 2014, शनिवार – प.पू. गुरुजी की प्राकट्य तिथि की पूर्व संध्या पर सायं 7:00 बजे गुणातीत स्वरूपों की निश्रा में **'कल्पवृक्ष'** में घरेलू सभा आयोजित की गई थी। आवाह्न धुन एवं प.भ. राकेशभाई, प.भ. हृदय व प.भ. दिव्यांग द्वारा भजन प्रस्तुति के बाद, ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज एवं सभी गुणातीत स्वरुपों के प्रसन्नतापात्र लंडन निवासी **प.भ. किशोरभाई मास्टर्स** ने अनुभवों का खूब सुंदर दर्शन कराया। इनके अतिरिक्त दिल्ली मंदिर से थोड़े ही समय पहले, लेकिन खूब घनिष्ठता से जुड़े **प.भ. देवेशजी** एवं **प.भ. डॉ. दिव्यांग** –जिसका जन्म ही दृढ़ सत्संगी परिवार में हुआ – ने अत्यंत हृदयस्पर्शी माहात्म्यभरी प्रार्थना की। तत्पश्चात् **प.पू. भरतभाई** एवं **प.पू दिनकरभाई** का आशीर्वाद प्राप्त किया। सभा के अंत में **प.भ. विपिन** जो कि बचपन से ही मंदिर-प.पू. गुरुजी से खूब अपनेपन से जुड़ा है, उसने पहली बार अपने अनुभवों से सभी को अवगत कराया और... विसर्जन प्रार्थना के साथ घर-घर की इस सभा का समापन हुआ।

अगले दिन **2 मार्च 2014, रविवार – प.पू. गुरुजी के प्राकट्य तिथि** की सुबह 'कल्पवृक्ष' हॉल में ही साढ़े नौ बजे प.पू. वशीभाई के साथ पू. अभिषेक ने विशिष्ट महापूजा आरंभ की। गुणातीत स्वरूपों की हाज़िरी में महापूजा संपन्न होने के बाद **पू. इलेशभाई** के भक्तिभरे भजन से सभा प्रारंभ हुई, जिसमें मंदिर से खूब अपनेपन से जुड़े **प.भ. मोहित गर्गजी** ने अनुभव दर्शन कराया। पू. राकेशभाई द्वारा भजन प्रस्तुति के बाद गुणातीत प्रकाश के **पू. नंदुभाई** ने गुरुहरि पप्पाजी महाराज के साथ की प.पू. गुरुजी की दिव्य स्मृतियों का वर्णन किया और सभा के अंत में **प.पू. महेन्द्र बापु** ने आशीष वर्षा की। तत्पश्चात् **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** के आगमन की आतुरता से राह देखते हुए प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. महेन्द्र बापु, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई के साथ सभी भक्त नीचे चौक में और बाहर मंदिर की सीढ़ियों पर बैठ गए। दोपहर को करीब दो बजे प.पू. स्वामिजी के साथ पू. प्रेमस्वामी, पू. भक्तिस्वामी, पू. सेवकस्वामी एवं संतों ने मंदिर के प्रांगण में प्रवेश किया। थोड़ी देर मंदिर के बाहर बैठ कर प.पू. स्वामिजी ने सबको दर्शन दिए और फिर भोजन के लिए प्रस्थान किया। भोजन के पश्चात् प.पू. स्वामिजी **'चिदाकाश'** हॉल में आए और प.पू. गुरुजी के सोफे पर बैठ कर करीब बीस मिनिट तक दर्शन का लाभ देकर आराम के लिए गए।

'तीन फरवरी पार्क' के पिछले हिस्से में प.पू. गुरुजी के 77वें प्राकट्योत्सव का आयोजन किया गया था। सायं साढ़े छः बजे 'टमटम' में प.पू. स्वामिजी, प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई ने पुष्प गलीचे से गुज़रते हुए सभा मंडप में प्रवेश किया। आवाह्न धुन से सभा की शुभ शुरुआत हुई और प.भ. राकेशभाई ने भजन प्रस्तुत किया।

अबकी बार प.पू. गुरुजी के प्राकट्योत्सव के निमंत्रण कार्ड पर पू. आशिष ने जिस ढंग से **'स्वरूपलक्षी सुहृद्भाव'** का भाव अंकित किया था,

उसका मर्म अधिकांश मुक्तों को स्पष्ट नहीं हुआ होगा। सो, पृष्ठभूमि पर उसी का दर्शन हो रहा था, जिसमें छः हाथ एक-दूजे से मिलाते हुए दिखाए थे। उसके अंदर भारत का नक्शा और उसके अंदर आशीर्वाद देता ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज का दाहिना हाथ दिखाया था। मंच के ऊपर बड़े अक्षरों से ब्रह्मस्वरूप काकाजी का निम्न आशीर्वाद प्राप्त हो रहा था –

'स्वरूपलक्षी मैत्री रखोगे, तो संत की प्रसन्नता मिलेगी और

प्रभु आपके सभी काम हल्के-आसान करके सफल कर देंगे।'

पू. राकेशभाई ने पृष्ठभूमि का विवरण देते हुए प्रार्थना की –

परस्पर एक-दूजे के पकड़े **हाथ 'सुहृद्भाव'** का प्रतीक हैं।

बीचोंबीच सभी को आशीष प्रदान करता **ब्रह्मस्वरूप काकाजी का हाथ** भगवत्स्वरूप संत के द्वारा प्राप्त **प्रभु के आशीर्वाद का प्रतीक है।**

और... भगवान स्वामिनारायण ने समग्र मानवजाति पर करुणा ही बरसाई कि –

भगवत्स्वरूप संतों के द्वारा वे **भरतखंड में सदैव प्रगट** रहेंगे।

यह दर्शाने के लिए भारतवर्ष का नक्शा दिखाया है।

ब्रह्मस्वरूप काकाजी कहते –

संबंध वाले मुक्तों-भक्तों के साथ **'स्वरुपलक्षी सुहृद्भाव'** यानि – हमें मिले प्रगट प्रभु को केन्द्र में रख कर, भक्तों के साथ 'सुहृद्भाव' दृढ़ करेंगे, तो संत के अंतर की प्रसन्नता पा सकेंगे।

सो, आज हम सभी स्वरूपों के श्रीचरणों में प्रार्थना करें कि – सही मायने में 'स्वरुपलक्षी सुहृद्भाव' से जीने की राह पर चलते हुए आपको भीतर से-अंतर से राजी कर लें और आपके आशीर्वचन झेलकर सदैव, सर्वथा सुखी रहें।

हम सभी जानते हैं कि सर्वप्रथम ब्रह्मस्वरूप काकाजी ने खूब परिश्रम करके पंजाब में स्वामिनारायण सत्संग के बीज बोए। सो, आज की सभा में सबसे पहले जगरांव के हमारे पुराने जोगी **प.भ. नरेन्द्र शर्माजी** ने ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं प.पू. गुरुजी के प्रति अपना भाव प्रकट किया। तत्पश्चात् मुंबई के हमारे खूब आत्मीय ऐसे दिल्ली-सत्संग समाज के 'नानू' **प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी** ने कविता के रूप में अपनी भावना प्रकट की। वे चार्टर्ड एकाउन्टन्ट हैं, सो उनकी एक शैली है कि वे संख्याओं के जोड़ से मांगलिक अवसरों के दिनाँक को अविस्मरणीय बना देते हैं। सो, अबकी बार प.पू. गुरुजी के जन्म दिनाँक 13.03.'37 के नंबर का करन्सी नोट प.पू. गुरुजी को भेंट रूप दी।

भेंट अर्पण के बाद हार अर्पण एवं पुष्प अर्पण द्वारा गुणातीत स्वरुपों व माननीय अतिथियों का स्वागत किया गया। गुणातीत समाज के केन्द्रों से आए संतों, मुक्तों ने अपनत्व से भरपूर हार व स्मृति भेंट प.पू. गुरुजी को अर्पण की। प.पू. साहेबजी के नींव के आठ भाइयों में से एक **प.पू. रतिभाई** अपने **अमृतपर्व वर्ष** में दर्शन देने के लिए आए, सो सभी की ओर से **पू. अभिषेक** ने उन्हें हार एवं स्मृति भेंट अर्पण की। तत्पश्चात् **प.पू. रतिभाई** एवं **प.पू. वशीभाई** ने प.पू. गुरुजी के साथ के अपने अनोखे संबंध का दर्शन कराते हुए आशीर्वाद दिया।

दिल्ली में शुरुआत के दिनों से प.पू. काकाजी

के वचन से एकनिष्ठा से जुड़े पुराने जोगी **प.भ. नवीनभाई शाह**-प.पू. गुरुजी को खूब प्रिय नक्षु के दादा का भी आज जन्मदिन था। सो, जन्मदिन के निमित्त उन्हें स्मृति भेंट अर्पण इत्यादि के बाद प.भ. दिव्यांग ने भजन गाया और **प.भ. घनश्यामभाई अमीन** ने भजनों की नई सी. डी. **'स्वर्णस्वर - 12'** का अनावरण किया। और फिर... **पू. दासस्वामिजी, प.पू. दिनकरभाई** और **प.पू. भरतभाई** से आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद **प.पू. महेन्द्र बापु** के वरद् हस्तों प.पू. गुरुजी द्वारा बरसाए आशीर्वचनों की सी.डी. **'मार्गदर्शिका-8'** का उद्घाटन हुआ। प.भ. राकेशभाई एवं प.भ. दिव्यांग द्वारा भजन की प्रस्तुति के बाद **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** ने आशिष वर्षा की। आशिष वर्षा इसलिए कही जाए क्योंकि 2012–'योगी परिवार हीरक आनंदोत्सव' के बाद यूँ उत्सव में प.पू. स्वामिजी के दर्शन, सेवा, समागम का फिलहाल लाभ मिला था। और... प.पू. स्वामिजी ने भी कड़ाके की ठंड होने के बावजूद तसल्ली से आशीर्वाद दिया। प.भ. राकेशभाई, प.भ. दिव्यांग एवं प.भ. हृदय द्वारा उत्सव निमित्त बना नया भजन– ***'धाम से लाए काकाजी साथ, चैतन्यों के राहबर मिले...'*** गाया। और... केवल डेढ़ वर्ष पूर्व, परंतु अपनेपन से जुड़े प.भ. आई.एम. गर्ग साहेब के हृदय उद्गार के बाद आख़िर में प.पू. गुरुजी ने अपने कुनबे के प्रति प्रेम व्यक्त करते हुए आशीर्वाद दिया। लेकिन, उत्सव यहाँ समाप्त नहीं हुआ था; सत्संग के युवाओं ने अपने प्यारे प.पू. गुरुजी के प्रति भक्ति अदा करते हुए 'मारवाड़ी वेशभूषा' में –***'काकाजी से संबंध करके ब्रह्मभाव जिसने प्रगटायो...'*** –भावनृत्य किया।

अबकी बार मौसम ने तो मानो चार सौ - पाँच सौ निजी मुक्तों के लगाव, धीरज और श्रद्धा का दर्शन कराया! इतने वर्षों में कभी ऐसा नहीं हुआ कि दिल्ली में मार्च के महीने में जनवरी के शुरुआत के दिनों जैसी कड़ाके की ठंड पड़ी हो। सायं तक तो अच्छी धूप थी, मौसम ख़ुशनुमा था। लेकिन, रात को आठ बजे के बाद मौसम ने यकायक पल्टी मारी और इतनी ठंड बढ़ गई कि कुर्सियों पर तेज ओस पड़ने लगी। पूरा एरिया भी खुला था, ऊपर टेन्ट की छत नहीं थी। दरअसल, स्टेज तो टेन्ट की छत से ढका हुआ था और वहाँ काफी हॅलोजन लाईट्स भी लगी थीं। सो, उत्सव समाप्त होने के बाद प.पू. गुरुजी जब स्टेज से नीचे उतरे, तब ही उन्हें ख्याल पड़ा कि इतनी ठंड है और फिर भी देर रात तक ये सब मुक्त बैठे रहे। बाद में इस बात को आठ-दस बार दोहराते हुए **प.पू. गुरुजी** नम आँखों से बोले भी–

स्टेज पर लगे हुए टी.वी. स्क्रीन पर मैं देख तो रहा था कि स्वॅटर-शॉल इत्यादि से सिर तक ढक कर अधिकतर मुक्त बैठे हैं। पर, मुझे यह ख्याल नहीं आया कि ठार के कारण ऐसे बैठे हैं। यदि उस समय मुझे ख्याल पड़ जाता या कोई मुझे बताता तो स्वामिजी के आशीर्वचन के बाद ही मैं सभा विसर्जित करवा देता। वाकई, इन मुक्तों की श्रद्धा-भक्ति और अपनापन कहना पड़े कि ऐसी ठंड में सब देर तक बैठे ही रहे।

इस माहौल की अविस्मरणीय स्मृतियों को संजो कर मुक्त समाज ने धन्यता पाई और अगले दिन और दो-तीन दिन के बाद बाहर से आए आत्मीय स्वजनों ने विदाई ली।

✡✡✡

डॉक्टर दादा (पू. सनंदभाई) महाराज में लीन हो गए!

– संत भगवंत साहेबजी

गुरुहरि योगीजी महाराज की आज्ञा और ब्रह्मस्वरूप काकाजी, ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी एवं ब्रह्मस्वरूपिणी सोनाबा के वात्सल्य, प्रेम व प्रेरणा से **संत भगवंत साहेबजी** ने आठ साथी मुक्तों के साथ विद्यानगर में भगवान भजने की शुरुआत की थी। इन आठ कर्मयोगी संतों में से **पू. डॉ. सनंदभाई पटेल** ने गुरुहरि योगीबापा एवं प.पू. साहेबजी की दिव्य स्मृति करते हुए **22 अप्रैल 2014** की सुबह स्वतंत्ररूप से पंचभूत का शरीर त्याग दिया! जैसे ही **प.पू. साहेबजी** ने यह जाना, तो वे बोल उठे – ***डॉक्टर दादा महाराज में लीन हो गए!***

23 अप्रैल की सुबह तपोभूमि **'ब्रह्मज्योति'** के प्रांगण में गुरुहरि योगीजी महाराज की मूर्ति के समक्ष, प.पू. साहेबजी की निश्रा में गुणातीत समाज के केन्द्रों के संतों, व्रतधारी भाइयों, संत बहनों एवं गृहस्थ समाज ने पूजन करके भावांजलि अर्पण की। तत्पश्चात् 'योगी प्रसाद' के पीछे **'ब्रह्मलीन स्थल'** पर शास्त्रोक्त विधि से उनका अग्नि संस्कार हुआ और सायं श्रद्धांजलि सभा हुई।

जब से प.पू. गुरुजी को पू. सनंदभाई की नादुरस्त तबियत की खबर मिली थी, तब से उदास-से होकर लगातार पू. अश्विनभाई से अनुपम मिशन-'मोगरी' फोन करके उनके विषय में पूछते रहते। खूब इच्छा होने के बावजूद उन दिनों कॅट्रेक्ट का ऑपरेशन किए होने व तबियत नादुरस्त होने के कारण वे उनसे मिलने के लिए न जा सके और... जब पू. सनंदभाई के अक्षरनिवासी होने की खबर मिली, तो इनका हृदय व कंठ इतना भर आया कि वे साहेबजी व पू. अश्विनभाई से बात ही न कर पाए और नींव के इस 'महान योगी' को याद करते हुए उनकी आँखें भर आईं! फिर तो उन्होंने पू. सुहृद्स्वरूपस्वामी, पू. अक्षरस्वरूपस्वामी एवं पू. पुनीत को अंतिम दर्शन करने व श्रद्धांजलि अर्पण करने के लिए भेजा। वहाँ से पू. पुनीत वीडियो कॅच करके जिस दिन आया, उसी दिन शाम को प.पू. गुरुजी ने वह देखी और सभी को दर्शन भी करवाए। इससे ख्याल पड़ता है कि **प.पू. काकाजी ने 'योगी परिवार' में कुटुंबभाव का कैसा सिंचन किया होगा कि आज दूर-सुदूर रहते हुए भी इस परिवार के सभ्यों को एक-दूजे के लिए इतनी गाढ़ प्रीति-संवेदना बनी रही है!**

पू. सनंदभाई के प्रति भावांजलि अर्पण करते हुए **गुणातीत समाज के शिरछत्र प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** ने बँग्लोर से संदेश भेजा –

(पू. सनंदभाई) अजोड़ साधक थे। हम सभी के लिए चिरंतन हैं। वे हम सभी को प्रेरणा देते ही रहेंगे। उन्हें जीवंत रख कर हमें उनका ऋण अदा करते रहना है। वे हमें प्रेरणा देकर बापा के साथ हमारा संबंध बढ़ाते ही रहेंगे। उनका ऋण भुलाया नहीं जा सकता। ***सिंह जैसे उस व्यक्तित्व*** *को याद करते हुए हम सभी उन्हें अमर रखें...*

प.पू. भरतभाई ने डॉक्टर साहेब के जीवन का दर्शन कराते हुए बताया –

उन्हें 'महापूजा' में खूब रुचि थी। जैसे कि साहेब कहते हैं कि वशीभाई बहुत अच्छी महापूजा करते हैं; सो उन्होंने वशीभाई द्वारा की गई महापूजा रॅकॉर्ड करवा कर मंगवाई कि मुझे इस प्रकार महापूजा तैयार करवानी है और उसी के मुताबिक एक किताब भी बनवाई। 'एक छोटा भक्त जो इतनी अच्छी महापूजा करता है, वह मुझे सीखनी है' – यह कैसा सेवकभाव होगा, सीखने की कैसी भावना होगी!

दूसरी बात – एक बार वे काकाजी से मिलने के लिए बाईक पर आ रहे होंगे, तो रास्ते के गड्डे में गिर गए। अंतर्यामी रुप से काकाजी ने उनसे कहा कि हम बाईक चलाने के लिए नहीं आए हैं। हमें बाईक नहीं चलानी है। उस दिन से उन्होंने कभी भी बाईक नहीं चलाई। सुना है कि फॅक्टरी पर जाते, तो साइकिल पर जाते। यूँ अपने वर्तन, जीवन से उन्होंने तादृश दर्शन कराया कि गुणातीत पुरुषों का छोटा सूचन को भी कैसे मानना चाहिए...

प.पू. साहेबजी की निश्रा में तकरीबन साढ़े पाँच दशक से निरंतर प्रभु मूर्ति में निमग्न रहते हुए साधना कर रहे ऐसे **पू. सनंदभाई** का इसी वर्ष जनवरी महीने में **'अमृतपर्व'** मनाया गया। तब **प.पू. साहेबजी** ने उनके जीवन, गुरुहरि योगीजी महाराज के प्रति उनकी भक्ति का जो प्रकार वर्णन किया, उससे उनके जीवन का दर्शन हो जाता है...

'योगीजी महाराज ने हम पर खूब कृपा की कि अपने प्रेम और लगाव से अपने में जोड़ लिया और काकाजी, पप्पाजी व बा की सेरेछाया में हमें रख दिया। हम कभी सोच भी नहीं सकते थे कि इस प्रकार भगवान भजेंगे और इन कपड़ों में रह कर भी आध्यात्मिक उन्नति को पाएँगे। बापा ने काकाजी के जोग में रहने की स्वयं आज्ञा दी; तत्पश्चात् काकाजी ने पप्पाजी के जोग में रहने की आज्ञा दी। इस प्रकार पप्पाजी व बा की निश्रा में हमने प्रगति की।

सनंदभाई *की प्रकृति का परिवर्तन एक असाधारण प्राप्ति कही जाए। परंतु यह सब पप्पाजी की प्रेरणा, बा के बेहद प्रेम और अश्विनभाई के साथ की अजोड़ मैत्री से संभव हुआ। सनंदभाई को अश्विनभाई के प्रति विशेष प्रेम। उन्हें कोई नई दवाई भी शुरू करनी हो, तो वे पहले अश्विनभाई से पूछते। यदि वे हाँ करते, तो ही वे लेते। उनकी यह मित्रता कॉलेज के समय से रही।*

डॉक्टर शुरू से ही बहुत निष्कपट, कर्तव्यनिष्ठ एवं अनुशासित। फॅक्टरी की शुरुआत से पहले वे 'कॉमेट पेईन्ट्स' में कार्यरत थे। वहाँ के मालिक भानुभाई पटेल ने जब सुना कि डॉक्टर शादी नहीं करने वाले और भगवान भजने के मार्ग पर चलने वाले हैं, तो वह खूब आश्चर्यचकित हुए। उन्हें ऐसा था कि यह तो संभव ही नहीं। उस समय डॉक्टर 'नेईल पॉलिश' बनाने के प्रोजेक्ट पर कार्य कर रहे थे। सो, भानुभाई ने वहाँ काम करती एक लड़की से कहा कि तुम डॉक्टर के पास जाओ और उससे कहना कि तुम्हारे नाखून पर नेईल पॉलिश लगा कर उसे टेस्ट करे। लड़की ने डॉक्टर के पास जाकर ऐसा ही कहा। डॉक्टर ने कहा कि तुम्हारे नाखून पर मैं नेईल पॉलिश नहीं लगाऊँगा, कृपया तुम यहाँ से चली जाओ। चूँकि उस लड़की को तो मालिक का आदेश था, सो वह निर्भीकता से जिद्द पर आई। डॉक्टर तो एकदम से खड़े हुए और उसे एक थप्पड़ मार दिया। तत्पश्चात् वह लड़की वहाँ कभी नज़र ही नहीं आई। इस एक प्रसंग से ख्याल पड़ता है कि डॉक्टर मर्यादा के कितने पक्के और ध्येयनिष्ठ होंगे!

...हालाँकि उन्हें चलने में थोड़ी तकलीफ होती है, फिर भी इतने बीमार होने के बावजूद उनकी दिनचर्या में कोई फर्क नहीं पड़ा... सभी के लिए महापूजा करते हैं और जो न आ पाते हो, उन्हें याद कर-करके प्रसाद भिजवाते हैं... आज हम इनका जन्मदिन मना रहे हैं और वे शांति से हमारी भावना ग्रहण कर रहे हैं। एक समय ऐसा था कि इन्हें यह पसंद ही नहीं था कि उनका जन्मदिन मनाया जाए या उन्हें कोई हार, भेंट इत्यादि अर्पण करे। परंतु डॉक्टर में संपूर्णतया बदलाव आ गया। एक बालक की भाँति वे सरल बने हैं और सभी को आनंद करवाते हैं... अनुपम मिशन से जुड़े सभी संतों, साधकों एवं गृहस्थों की प्रगति के लिए निरंतर प्रार्थना करते हैं...'

सो, प.पू. स्वामिजी के कहे अनुसार 'सिंह व्यक्तित्व' के पू. सनंदभाई के जीवन प्रसंगों से हम प्रेरणा लें और जैसे कि 23 अप्रैल की सायं भावांजलि सभा में माणावदर के साधक भाई **पू. दीनाभाई** एवं **पू. डॉ. मनोजभाई सोनी** ने खूब हृदयस्पर्शी व रहस्यमयी प्रार्थना की, जो प.पू. गुरुजी को खूब स्पर्श कर गई और बार-बार मर्म दोहराया कि –

हमारे विचार, वाणी, वर्तन से कभी भी बड़ों को गौण न करते हुए, भगवान का कार्य भगवान की रीति से करें...

किसी गुण, बड़प्पन, मान या अच्छाईपेशी के अधीन हम हमसे बड़ों को कभी भी गौण न करें और यही पू. सनंदभाई को सच्ची श्रद्धांजलि कहलाएगी।

'चातुर्मास के नियम'

भगवान और संत की प्रसन्नता हेतु इस चातुर्मास दौरान सभी सत्संगी निम्न नियमों का पालन करें।

1. सावन के महीने यानि– **27** जुलाई से **25** अगस्त तक एक बारी भोजन लें।
2. **9 जुलाई, बुधवार** - नियम की एकादशी, **17 अगस्त, रविवार** - जन्माष्टमी
   5 सितंबर, शुक्रवार - जलझीलनी एकादशी, **3 नवंबर, सोमवार** - कार्तिक शुक्ला एकादशी
   इन चारों दिन व्रत रखें।
3. चातुर्मास दौरान यथाशक्ति महापूजा करवाएं।
4. रोज सुबह या सायं '**स्वामिनारायण महामंत्र**' का अजपाजप करते हुए चालीस मिनिट तेज़ वॉकिंग करें।
5. सावन महीने के दौरान '**भगवत् कृपा**' के पिछले अंकों में आई संतों-मुक्तों की ज्ञानवार्ता का क्रमशः नियमित रूप से रोज़ पाठ करते हुए उस पर मनन-चिंतन करें।
6. **चातुर्मास दौरान छोटे-बड़े किसी भी प्रसंग में प्रगट प्रभु को ही कर्ता-हर्ता न मान कर बाह्यदृष्टि रखते हुए वर्ताव कर दिया हो, तो उस दिन नित्य की धुन के अतिरिक्त 'प्रायश्चित् रूप' में 20 मिनिट धुन अधिक करें।**

भजन

(राग– लागे वैकुंठथी रूडुं वड़ताल...)

हो... धाम से लाए काकाजी साथ, चैतन्यों के राहबर मिले,-2

गुरुजी की मिली है सौगात, संबंध हम दृढ़ कर लें,-2

हो... तेरी मूर्ति दे सुख अपार, हृदय हरि खेलते रे,-2

टाल दे पल में विषय और राग, हृदय हरि खेलते रे,-2

भक्त समाज चाहे गुरु उन्हें माने -2,

खुद को स्वरूपों का सेवक ही जाने,

खुद को वो मुक्तों का साथी ही जाने,

हे... गुणातीत अस्मिता की शान, चैतन्यों के राहबर मिले, -2

गुरुजी की मिली है सौगात, संबंध हम दृढ़ कर लें।

हो... तेरी मूर्ति दे सुख अपार, हृदय हरि खेलते रे...

ढूंढे से ना मिले जो, हैं कृपा से पाए,

जन्म-कर्म तेरा हम दिव्य मान गाएँ,

जन्म-कर्म तेरा हम दिव्य मान गाएँ,

हे... तभी माया से हो पाएँ पार, चैतन्यों के राहबर मिले, -2

गुरुजी की मिली है सौगात, संबंध हम दृढ़ कर लें।

तेरी मूर्ति दे सुख अपार, हृदय हरि खेलते रे...

आप और आपका टोला मिला न्यारा,

साथ रहना मिला, सौभाग्य ये हमारा, -2

हे... सत्संगी ही हमरी नात-जात, वही सत्य मान कर जिएँ, -2

गुरुजी की मिली है सौगात, संबंध हम दृढ़ कर लें।

धाम से लाए काकाजी साथ, चैतन्यों के राहबर मिले,

तेरी मूर्ति दे सुख अपार, हृदय हरि खेलते रे...

निमंत्रण

आइए,

12 जून 2014, गुरुवार सायं 6:30 से रात्रि 9:15

प.पू. गुरुजी की निश्रा में –

ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज के 96वें प्राकट्योत्सव

एवं

'अनुष्ठान शिविर' की पूर्णाहुति के निमित्त

'ताड़देव' – अशोकविहार, श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर में

इष्ट मित्रमण्डली सहित उपस्थित रह कर

दर्शन, सेवा, समागम और आमरस के प्रसाद का लाभ लेकर स्वयं को धन्य करें...

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि.	15.5.2014,	गुरुवार	—	**'अनुष्ठान शिविर' का मंगल प्रारंभ** **शिविर का समय – सायं 7:00 से 9:00**
(2)	दि.	24.5.2014,	शनिवार	—	एकादशी, व्रत
(3)	दि.	**25.5.2014**,	**रविवार**	—	**ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज का प्राकट्योत्सव,** **प.पू. गुरुजी की भागवती दीक्षा तिथि**
(4)	दि.	28.5.2014,	बुधवार	—	ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज का स्वधामगमन दिन
(5)	दि.	1.6.2014,	रविवार	—	ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज का दृष्टा दिन 'गुणातीत ज्योत' स्थापना दिन
(6)	दि.	8.6.2014,	रविवार	—	भगवान स्वामिनारायण की स्वधामगमन तिथि
(7)	दि.	9.6.2014,	सोमवार	—	भीम एकादशी, व्रत
(8)	दि.	10.6.2014,	मंगलवार	—	वटसावित्री
(9)	दि.	12.6.2014,	**गुरुवार**	—	**गुरुहरि प.पू. काकाजी महाराज का प्राकट्योत्सव एवं 'अनुष्ठान शिविर' की पूर्णाहुति** *(सायं 6:30 से 9:15 मनाएंगे।)*
(10)	दि.	23.6.2014,	सोमवार	—	एकादशी, व्रत
(11)	दि.	29.6.2014,	रविवार	—	रथयात्रा
(12)	**दि.**	**9.7.2014**,	**बुधवार**	—	**देवशयनी एकादशी, व्रत – चातुर्मास प्रारंभ**
(13)	दि.	12.7.2014,	**शनिवार**	—	**गुरुपूर्णिमा** *

* *सुबह 8:45 से 10:15 ताड़देव मंदिर में मनाएंगे। जो इस समय न आ पाएँ, वे दिन में किसी भी समय आ करके 'गुरुपूजन' कर सकेंगे।*

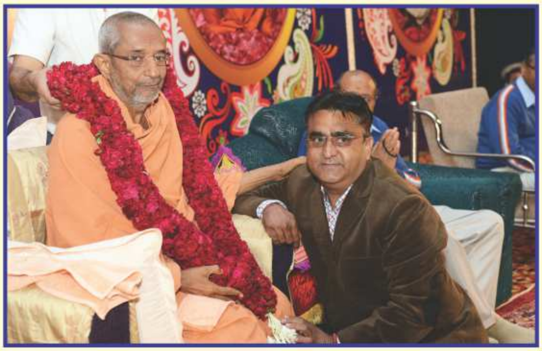

स्वरुपों का अभिनंदन एवं 'स्मृति' अनावरण...

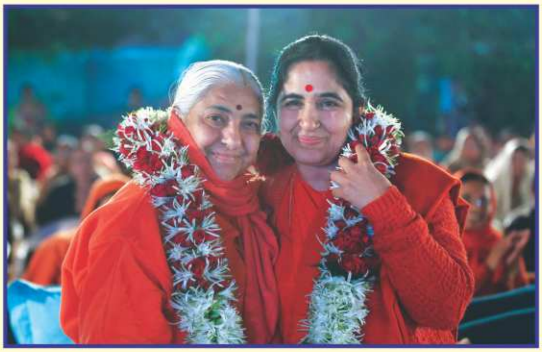

27 फरवरी 2014, महाशिवरात्रि

'अपना घर' में 'लघुरुद्र'...

R.N.I. 28971/ 77
Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched Bimonthly
If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :-*
SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI
'Taad-dev', Kãkãji Lane, Swãminãrãyan Mãrg, Ashok Vihãr-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 4709 1281
Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A 6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052